गुप्त साम्राज्य (GUPTA EMPIRE)

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद, लगभग 500 वर्षों तक भारतीय राजनीतिक एकता प्रायः समाप्त हो गयी थी। कई राजनीतिक और सांस्कृतिक शक्तियों का उदय हो चुका था। विदेशी आक्रमणकारियों जैसे- यवन, शक, पह्लवों ने भारत के विभिन्न भागों पर अपने-अपने राज्य स्थापित कर लिये थे। इन आक्रमणों से उत्तर भारतीय जनमानस ने एक ऐसे शक्तिशाली शासन की आवश्यकता का अनुभव किया जो इन आक्रमणों को विफल कर सके। ऐसे ही परिवेश में वाकाटक नरेश और पूरब में गुप्तों का उदय हुआ।

इन शासकों ने अपने संगठित प्रयत्नों से भारत [illegible] कुषाण आक्रमण का अन्त कर दिया। प्रारंभिक गुप्तों की शक्ति उत्तर भारत के एक कोने से दूसरे कोने में शासन के रूप में उठे थे, किन्तु अतिशय ही इस काल के गौरवमय आख्यानों ने अपने को ऐतिहासिक अभिव्यक्ति विरुद्ध माने हुए शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। गुप्त वंश के 300 वर्षों के शासन के भारतीय हिन्दू साम्राज्य की परम्परा अपनी उन्नति के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी थी। शिक्षा, धर्म, साहित्य, ललित कला, स्थापत्य कला, धर्म, विज्ञान, वाणिज्य एवं व्यापार और औपनिवेशिकता की दृष्टि से यह काल भारतीय इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण है।

गुप्तकालीन ऐतिहासिक स्रोत

गुप्तकालीन इतिहास के अध्ययन के लिए विभिन्न स्रोत उपलब्ध रहे हैं जो हम सुविधानुसार पांच भागों में ~~बाँटकर~~ विभाजित कर सकते हैं — उत्कीर्ण लेख, मुद्रा, स्थापत्यकला, साहित्य और यात्रा विवरण

1. उत्कीर्ण लेख – गुप्तकालीन इतिहास के अध्ययन के लिए उत्कीर्ण लेख सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है। गुप्तकालीन लेख शिलाखंडों, स्तम्भों और ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण मिलते हैं। इनकी संख्या पर ढेर से अभिलेख मिले हैं, जिनमें अनेक गुप्तवंशीय शासकों के हैं। इन लेखों से शासकों की वंशावली और उनकी तिथिक्रम, राज्यसीमा, प्रशासनिक नियुक्ति और धार्मिक का पता ~~चलता~~ चलता है। ~~मीठ~~ हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त की दिग्विजय और उसकी शर्तों के विवरण मिलता है। महरौली अभिलेख से चन्द्रगुप्त द्वितीय की बंगों की पराजय का वर्णन मिलता है। उत्कीर्ण लेखों से तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है। स्कन्दगुप्त के भितरी और गिरनार-जूनागढ़ में भी उत्कीर्ण लेखों से जानकारी मिलती है। इन लेखों से संस्कृत साहित्य की श्रेष्ठता का भी पता चलता है। हरिषेण की प्रयाग-प्रशस्ति और वत्सभट्टि द्वारा रचित मंदसौर अभिलेख संस्कृत साहित्य के उत्कृष्ट ~~रूप~~ रूप माने जाते हैं। भारत के विभिन्न भागों में गुप्तों के अभिलेख मिले हैं और इन अभिलेखों के आधार पर ही गुप्तकाल के इतिहास को जानने का सफलतम प्रयास किया जाता है।

मुद्रा – उत्कीर्ण लेखों की तरह मुद्रा भी गुप्त इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुई है। इस युग के सोने के सिक्कों का बाहुल्य था। ऐसे ही सिक्के 1949-50 ई० में बयाना ढेर से लगभग ~~[illegible]~~ सोने के सिक्के प्राप्त हुए हैं। इन सिक्कों से तत्कालीन शासक का राज-शृंगार, वेशभूषा, रहन-सहन, धार्मिक, चारित्रिक विचार तथा दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं का

परिज्ञान प्राप्त होता है। उक्त आख्यानों से [illegible] विवरणों [illegible] विभिन्न [illegible] के बारे में जानकारी मिलती है। उन्होंने [illegible] की विभिन्न [illegible] शैली के हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने भारत [illegible] का अपना अभिव्यक्ति [illegible] किया था। जैसे कि विभिन्नों के अनुसार [illegible] की विशेष बातें मिलती हैं। समाज में [illegible] कारण [illegible] के [illegible] से [illegible] था। [illegible] विवरणों की [illegible] [illegible] से मिलती है, [illegible] विवरणों पर [illegible] विवरणों की जानकारी मिलती है।

शिल्पस्थापत्य

प्राचीन सांस्कृतिक जीवन का ज्ञान शिल्पस्थापत्य से मिलता है। उस समय मन्दिर [illegible] धार्मिक संस्थाएँ थे, जिनमें ही उन्होंने अपने भक्तों के प्रति अभिव्यक्ति की नीति अपनाई थी। इनसे [illegible] की जानकारी स्थापत्य कला से मिलती है। [illegible] की जगह [illegible] संस्कृति [illegible] प्रमाण है। इस काल मन्दिरों की प्रमुख शैली, नागर शैली और बेसर शैली का विकास हुआ। मन्दिरों के [illegible] मूर्तियों में [illegible] से प्राप्त मूर्तियाँ कलात्मक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित है। वर्तमान में यह मूर्ति [illegible] संग्रहालय, [illegible] के अधीन है। इन मूर्तियों से उस युग की धार्मिक अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है।

साहित्य

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से [illegible] को स्वर्णयुग माना जाता है। इस युग में भारत के समाज में संस्कृत का पर्याप्त विकास हुआ था, पुराणों में यथा – ब्रह्माण्ड पुराण, वायु पुराण और विष्णु पुराण में उक्त आख्यानों से सम्बन्धित विशेष जानकारी प्राप्त होती है। 'भविष्योत्तर पुराण' में [illegible] के इतिहास को [illegible] का प्रमुख साधन माना जाता है। इसमें उन्होंने [illegible] की राजनीतिक स्थिति का पता भी चलता ही है, साथ ही उनके धार्मिक आख्यानों के बारे में भी जानकारी मिलती है।

अनेक ऐतिहासिक साहित्यिक नाटक, जैसे [illegible] विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस' एवं विशाखदत्त कृत 'देवीचन्द्रगुप्तम्' आदि भी युद्धों के इतिहास के अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें संस्कृत नाटकों, काव्यों तथा अन्य साहित्यिक रचनाओं की प्रस्तावना [illegible], महाकाव्यों आदि में युद्ध वर्णनों के उल्लेख मिलते हैं। कालिदास की रचनाएँ, कामन्दकीय नीतिसार, कल्हणकृत राजतरंगिणी एवं पृथ्वीराजरासो [illegible] में भी युद्ध सम्बन्धी अत्यधिक जानकारी मिलती है। पुरातात्विक शिलालेख, [illegible] (ताम्रपत्र), मूर्तिकला (जैसे [illegible]) और [illegible] द्वारा प्रकाशित भी युद्ध इतिहास के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साधन हैं। इन सभी ग्रन्थों से तत्कालीन राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

विदेशी यात्रियों का वृतान्त

विदेशी यात्रियों के यात्रा-वृत्तान्तों से भी तत्कालीन जानकारी मिलती है। युद्धकालीन [illegible] विदेशियों के ~~[illegible]~~ आक्रमणकारियों के [illegible] [illegible] आदि का [illegible] के विवरण से [illegible] पर अत्यधिक प्रकाश पड़ता है। ह्वेनसांग, [illegible] आदि विदेशी यात्रियों के विवरण से भी युद्ध [illegible] के [illegible] में [illegible] मिलती है। [illegible] के [illegible] आक्रमण के उपरान्त विवरण, महत्वपूर्ण स्थान है। आक्रमणकारियों ने भी युद्ध-सम्बन्धी का उल्लेख किया है। इन सभी ग्रन्थों से तत्कालीन इतिहास का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इन सभी साधनों के बावजूद [illegible], सामाजिक एवं धार्मिक [illegible] के सम्बन्ध में [illegible] अपूर्णता [illegible] रह जाता है।